22-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

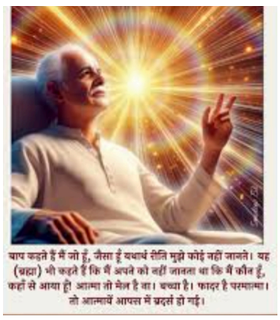

"मीठे बच्चे - बाप जो है, जैसा है, उसे यथार्थ पहचान कर याद करो, इसके लिए अपनी बुद्धि को विशाल बनाओ"

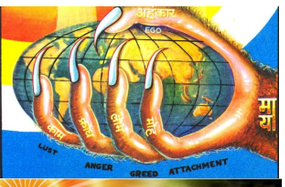

प्रश्नः-बाप को गरीब-निवाज़ क्यों कहा गया है?

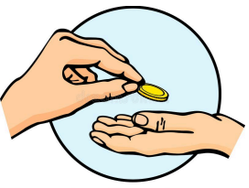

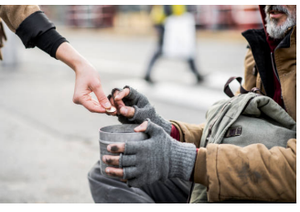

उत्तरः-क्योंकि इस समय जब सारी दुनिया गरीब अर्थात् दु:खी बन गई है तब बाप आये हैं सबको दु:ख से छुड़ाने। बाकी किस पर तरस खाकर कपड़े दे देना, पैसा दे देना वह कोई कमाल की बात नहीं। इससे वह कोई साहूकार नहीं बन जाते। ऐसे नहीं मैं कोई इन भीलों को पैसा देकर गरीब-निवाज़ कहलाऊंगा। मैं तो गरीब अर्थात् पतितों को, जिनमें ज्ञान नहीं है, उन्हें ज्ञान देकर पावन बनाता हूँ।

गीतः- यही बहार है दुनिया को भूल जाने की.....

Click

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे बच्चों ने गीत सुना। बच्चे जानते हैं गीत तो दुनियावी मनुष्यों ने गाया है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

22-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अक्षर बड़े अच्छे हैं, इस पुरानी दुनिया को भुलाना है। आगे ऐसे नहीं समझते थे। कलियुगी मनुष्यों को भी समझ में नहीं आता है कि नई दुनिया में जाना होगा तो जरूर पुरानी दुनिया को भूलना होगा। भल इतना समझते हैं पुरानी दुनिया को छोड़ना है परन्तु वह समझते हैं अजुन बहुत समय पड़ा है। नई सो पुरानी होगी, यह तो समझते हैं परन्तु लम्बा टाइम डालने से भूल गये हैं। तुमको अब स्मृति दिलाई जाती है, अभी नई दुनिया स्थापन होती है इसलिए पुरानी दुनिया को भूलना है। भूल जाने से क्या होगा? हम यह शरीर छोड़ नई दुनिया में जायेंगे। परन्तु अज्ञान काल में ऐसी-ऐसी बातों के अर्थ पर किसका ध्यान नहीं जाता। जिस प्रकार बाप समझाते हैं, ऐसे कोई भी समझाने वाला नहीं है। तुम इनके अर्थ को समझ सकते हो। यह भी बच्चे जानते हैं - बाप है बहुत साधारण। अनन्य, अच्छे-अच्छे बच्चे भी पूरा समझते नहीं हैं। भूल जाते हैं कि इनमें शिवबाबा आते हैं। कोई भी डायरेक्शन देते हैं तो समझते नहीं कि यह शिवबाबा का डायरेक्शन है।

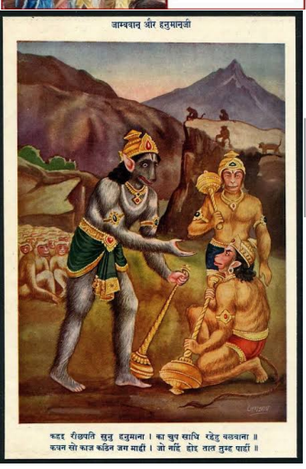

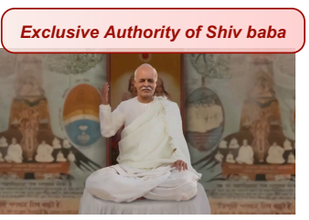

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्॥
मेरे परमभावको[2] न जाननेवाले मूढ़लोग मनुष्यका

१. जिसके सम्पूर्ण कार्य कर्तृत्वभावके बिना अपने-आप सत्तामात्रसे ही होते हैं, उसका नाम 'उदासीनके सदृश' है।
२. गीता अध्याय ७ श्लोक २४ में देखना चाहिये।

१२० * श्रीमद्भगवद्गीता * Adhyay-9 shloka-11

शरीर धारण करनेवाले मुझ सम्पूर्ण भूतोंके महान् ईश्वरको तुच्छ समझते हैं अर्थात् अपनी योगमायासे संसारके उद्धारके लिये मनुष्यरूपमें विचरते हुए मुझ परमेश्वरको साधारण मनुष्य मानते हैं॥ ११॥

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३॥ Adhyay-7

धर्मराज Don't take it easy...

क्या नहीं कर सकते। सबकी एक-एक बात एनाउन्स कर सकते हैं। कई भोलानाथ समझते हैं ना। तो कई बच्चे अभी भी बाप को भोला बनाते रहते हैं। भोलानाथ तो है लेकिन महाकाल भी है। अभी वह रूप बच्चों के आगे नहीं दिखाते हैं। नहीं तो सामने खड़े नहीं हो सकेंगे। इसलिए जानते हुए भी भोलेनाथ बनते है, अन्जान भी बन जाते हैं। लेकिन किसलिए? बच्चों को सम्पूर्ण बनाने के लिए। बापदादा यह सब

Attention..!

AV: 14/12/1987

योग धारणा सेवा M.imp.

शिवबाबा को सारा दिन जैसे भूले हुए हैं। पूरा न समझने कारण वह काम नहीं करते। माया याद करने नहीं देती। स्थाई वह याद ठहरती नहीं। मेहनत करते-करते पिछाड़ी में आखिर वह अवस्था होनी जरूर है। ऐसा कोई भी नहीं जो इस समय कर्मातीत अवस्था को पा ले। बाप जो है, जैसा है उनको जानने में बड़ी बुद्धि चाहिए।

Coming soon...

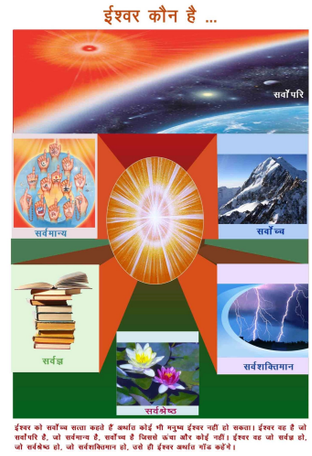

m.m.m....imp.

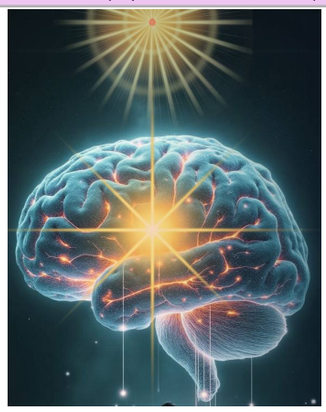

तुमसे पूछेंगे बापदादा गर्म कपड़े पहनते हैं? कहेंगे दोनों को पड़े हुए हैं। शिवबाबा कहेंगे मैं थोड़ेही गर्म कपड़े पहनूँगा। मुझे ठण्डी नहीं लगती। हाँ, जिसमें प्रवेश किया है उनको ठण्डी लगेगी। मुझे तो न भूख, न प्यास कुछ नहीं लगता। मैं तो निर्लेप हूँ। सर्विस करते हुए भी इन सब बातों से न्यारा हूँ। मैं खाता, पीता नहीं हूँ। जैसे एक साधू भी कहता था ना, मैं न खाता हूँ, न पीता हूँ.... उन्होंने फिर आर्टीफीशियल वेश धारण कर लिया है। देवताओं के नाम भी तो बहुतों ने रखे हैं। और कोई धर्म में

देवी-देवता बनते नहीं हैं। यहाँ कितने मन्दिर हैं। बाहर में तो एक शिवबाबा को ही मानते हैं। बुद्धि भी कहती है फादर तो एक होता है। फादर से ही वर्सा मिलता है। तुम बच्चों की बुद्धि में है - कल्प के इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बाबा से वर्सा मिलता है। जब हम सुखधाम में जाते हैं तो बाकी सब शान्तिधाम में रहते हैं। तुम्हारे में भी यह समझ नम्बरवार है। अगर ज्ञान के विचारों में रहते हैं तो उन्हों के बोल ही वह निकलेंगे। तुम रूप-बसन्त बन रहे हो - बाबा द्वारा। तुम रूप भी हो और बसन्त भी हो। दुनिया में और कोई कह न सके कि हम रूप-बसन्त हैं। तुम अभी पढ़ रहे हो, पिछाड़ी तक नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पढ़ लेंगे। शिवबाबा हम आत्माओं का बाप है ना। यह भी दिल से लगता तो है ना। भक्ति मार्ग में थोड़ेही दिल से लगता है। यहाँ तुम सम्मुख बैठे हो। समझते हो बाप फिर इस समय ही आयेंगे फिर कोई और समय बाप को आने की दरकार ही नहीं। सतयुग से त्रेता तक आना नहीं है। द्वापर से कलियुग तक भी आने का नहीं है। वह आते ही हैं कल्प के

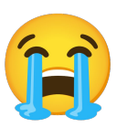

Please don't leave us Baba

कहाँ मिलेगा बाबा ऐसा
सतयुग में तेरा प्यार...

nts:

Understand the importance of this Time

चार दिनों का प्यार ओ रब्बा, बड़ी लम्बी जुदाई.....

संगमयुग पर। बाप है भी गरीब निवाज़ अर्थात् सारी दुनिया जो दु:खी गरीब हो जाती है उनका बाप है। इनकी दिल में क्या होगा? हम गरीब निवाज़ हैं। सबका दु:ख अथवा गरीबी मिट जाए। वो तो सिवाए ज्ञान से कम हो न सके। बाकी कपड़ा आदि देने से कोई साहूकार तो नहीं बन जायेंगे ना। करके गरीब को देखने से दिल होगी इनको कपड़ा दे दें, क्योंकि याद पड़ता है ना - मैं गरीब निवाज़ हूँ। साथ-साथ यह भी समझता हूँ - मैं गरीब निवाज़ कोई इन भीलों के लिए ही नहीं हूँ। मैं गरीब निवाज़ हूँ जो बिल्कुल ही पतित हैं उन्हों को पावन बनाता हूँ। मैं हूँ ही पतित-पावन। तो विचार चलता है, मैं गरीब निवाज़ हूँ परन्तु पैसे आदि कैसे दूँ। पैसे आदि देने वाले तो दुनिया में बहुत हैं। बहुत फन्ड्स निकालते हैं, जो फिर अनाथ आश्रम में भेज देते हैं। जानते हैं अनाथ रहते हैं अर्थात् जिसको नाथ नहीं। अनाथ माना गरीब। तुम्हारा भी नाथ नहीं था अर्थात् बाप नहीं था। तुम गरीब थे, ज्ञान नहीं था। जो रूप-बसन्त नहीं, वह गरीब अनाथ हैं। जो रूप बसन्त हैं

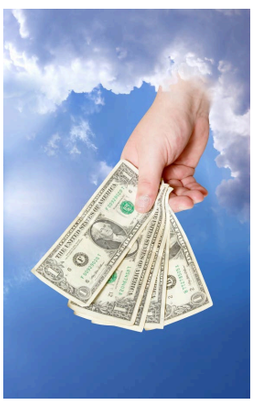

हमें आप बाबा ऐसे मिले हो कि
जैसे नई जिंदगी मिल गई है
किन शब्दों में आपका धन्यवाद करें

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

चरणों मे जगह मांगी थी, हमें
दिल मे बसा लिया,
थे एक नजर के प्यासे, नजरों में
समा लिया,
आपका शुक्रिया, आपका
शुक्रिया..

उनको सनाथ कहा जाता है। सनाथ साहूकार को, अनाथ गरीब को कहा जाता है। तुम्हारी बुद्धि में है सब गरीब हैं, कुछ उन्हों को दे देवें। बाप गरीब-निवाज़ है तो कहेंगे ऐसी चीज़ें देवें जिससे सदा के लिए साहूकार बन जायें। बाकी यह कपड़ा आदि देना तो कॉमन बात है। उनमें हम क्यों पड़ें। हम तो उनको अनाथ से सनाथ बना देवें। भल कितना भी कोई पद्मपति है, परन्तु वह भी सब अल्पकाल के लिए है। यह है ही अनाथों की दुनिया। भल पैसे वाले हैं, वह भी अल्पकाल के लिए। वहाँ हैं सदैव सनाथ। वहाँ ऐसे कर्म नहीं कूटते। यहाँ कितने गरीब हैं। जिनको धन है, उन्हों को तो अपना नशा चढ़ा रहता है - हम स्वर्ग में हैं। परन्तु हैं नहीं, यह तुम जानते हो। इस समय कोई भी मनुष्य सनाथ नहीं हैं, सब अनाथ हैं। यह पैसे आदि तो सब मिट्टी में मिल जाने वाले हैं। मनुष्य समझते हैं हमारे पास इतना धन है जो पुत्र-पोत्रे खाते रहेंगे। परम्परा चलता रहेगा। परन्तु ऐसे चलना नहीं है। यह तो सब विनाश हो जायेगा इसलिए तुमको इस सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य है।

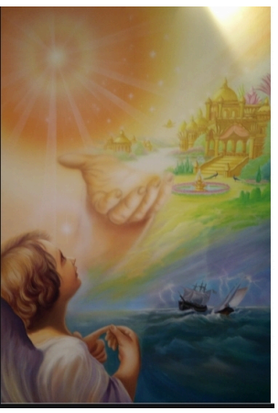

आंखें जो देखती है वह सब है मिटने वाले
चलना है निज वतन जहां के प्रभु है रहने वाले
अपनी नजर टिकाइए उस परमधाम पर
पल भर निकालिए प्रभु के भी नाम पर

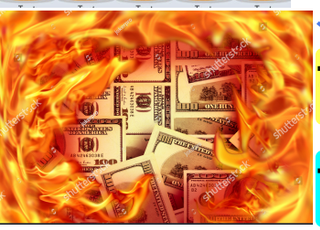

तुम जानते हो नई दुनिया को स्वर्ग, पुरानी दुनिया को नर्क कहा जाता है। हमको बाबा नई दुनिया के लिए साहूकार बना रहे हैं। यह पुरानी दुनिया तो खत्म हो जानी है। बाप कितना साहूकार बनाते हैं। यह लक्ष्मी-नारायण साहूकार कैसे बनें? क्या कोई साहूकार से वर्सा मिला वा लड़ाई की? जैसे दूसरे राजगद्दी पाते हैं, क्या ऐसे राजगद्दी पाई? वा कर्मों अनुसार यह धन मिला? बाप का कर्म सिखलाना तो बिल्कुल ही न्यारा है। कर्म-अकर्म-विकर्म अक्षर भी क्लीयर है ना। शास्त्रों में कुछ अक्षर हैं, आटे में नमक जितने रह जाते हैं। कहाँ इतने करोड़ मनुष्य, बाकी 9 लाख रहते हैं। क्वार्टर परसेन्ट भी नहीं हुआ। तो इसको कहा जाता है आटे में नमक। दुनिया सारी विनाश हो जाती है। बहुत थोड़े संगमयुग में रहते हैं। कोई पहले से शरीर छोड़ जाते हैं। वह फिर रिसीव करेंगे। जैसे मुगली बच्ची थी, अच्छी थी तो जन्म बिल्कुल अच्छे घर में लिया

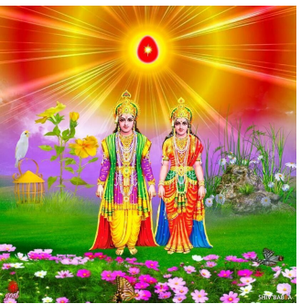

Multi Trillion dollar Question..

Secret Revealed

होगा। नम्बरवार सुख में ही जन्म लेते हैं। सुख तो उनको देखना है, थोड़ा दु:ख भी देखना है। कर्मातीत अवस्था तो किसकी हुई नहीं है। जन्म बड़े सुखी घर में जाकर लेंगे। ऐसे मत समझो यहाँ कोई सुखी घर हैं नहीं। बहुत परिवार ऐसे अच्छे होते हैं, बात मत पूछो। बाबा का देखा हुआ है।

बहुएं एक ही घर में ऐसे शान्त मिलाप में रहती हैं जो बस, सभी साथ में भक्ति करती हैं, गीता पढ़ती हैं....। बाबा ने पूछा इतनी सब इकट्ठी रहती हैं, झगड़ा आदि नहीं होता! बोला हमारे पास तो स्वर्ग है, हम सभी इकट्ठे रहते हैं। कभी लड़ते-झगड़ते नहीं हैं, शान्त में रहते हैं। कहते हैं यहाँ तो जैसे स्वर्ग है तो जरूर स्वर्ग पास्ट हो गया है तब कहने में आता है ना कि यहाँ तो जैसे स्वर्ग लगा पड़ा है।

परन्तु यहाँ तो बहुतों का स्वभाव स्वर्गवासी बनने का दिखाई नहीं देता। दास-दासियां भी तो बनने हैं ना। यह राजधानी स्थापन होती है। बाकी जो ब्राह्मण बनते हैं वह दैवी घराने में आने वाले हैं। परन्तु नम्बरवार हैं। कोई तो बहुत मीठे होते हैं, सबको प्यार करते रहेंगे। कभी किसको गुस्सा नहीं

22-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

करेंगे। गुस्सा करने से दु:ख होता है। जो मन्सा-वाचा-कर्मणा किसको दु:ख ही देते रहते हैं - उनको

Definition of

कहा जाता है दु:खी आत्मा। जैसे पुण्य आत्मा, पाप आत्मा कहते हैं ना। शरीर का नाम लेते हैं क्या? वास्तव में आत्मा ही बनती है, सब पाप आत्मायें भी एक जैसी नहीं होती हैं। पुण्य आत्मा भी सब एक जैसी नहीं होती। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार होते हैं। स्टूडेण्ट खुद समझते होंगे ना कि

Self Checking

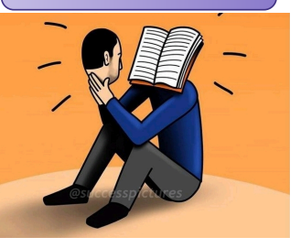

(1) हमारे कैरेक्टर्स, अवस्था कैसी है? (2) हम कैसे चलते हैं? (3) सबको मीठा बोलते हैं? (4) कोई कुछ कहे हम उल्टा-सुल्टा जवाब तो नहीं देते हैं? बाबा को कई बच्चे कहते हैं - बच्चों पर गुस्सा आ जाता है। बाबा कहते हैं जितना हो सके प्यार से काम लो। निर्मोही भी बनना चाहिए।

यह तो तुम बच्चे समझते हो - हमको यह लक्ष्मी-नारायण बनना है। एम ऑब्जेक्ट सामने खड़ी है। कितनी ऊंच एम ऑब्जेक्ट है। पढ़ाने वाला भी

22-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

हाइएस्ट है ना। श्रीकृष्ण की महिमा कितनी गाते हैं - सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पन्न.... अब तुम बच्चे जानते हो हम वह बन रहे हैं। तुम यहाँ आये ही हो यह बनने के लिए। तुम्हारी यह सच्ची सत्य नारायण की कथा है ही नर से नारायण बनने की। अमरकथा है अमरपुरी जाने की। कोई संन्यासी आदि इन बातों को नहीं जानते। नेती - नेती कोई भी मनुष्य मात्र को ज्ञान का सागर वा पतित-पावन नहीं कहेंगे। जबकि सारी सृष्टि ही पतित है तो हम पतित-पावन किसको कहें? यहाँ कोई पुण्य आत्मा हो न सके। बाप समझाते हैं - यह दुनिया पतित है। श्रीकृष्ण है अव्वल नम्बर। उनको भी भगवान नहीं कह सकते। जन्म-मरण रहित एक ही निराकार बाप है। गाया जाता है शिव परमात्माए नम:, ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को देवता कह फिर शिव को परमात्मा कहते हैं। तो शिव सबसे ऊपर हुआ ना। वह है सबका बाप। वर्सा भी बाप से मिलना है, सर्वव्यापी कहने से वर्सा नहीं मिलता है। बाप स्वर्ग की स्थापना करने वाला है तो जरूर स्वर्ग का ही वर्सा देंगे। यह लक्ष्मी-नारायण हैं नम्बरवन। पढ़ाई से यह

ये पक्का समझ लो..

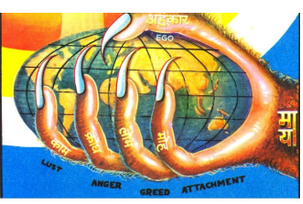

पद पाया। भारत का प्राचीन योग क्यों नहीं मशहूर होगा जिससे मनुष्य विश्व का मालिक बनते हैं उसको कहते हैं सहज योग, सहज ज्ञान। है भी बहुत सहज, एक ही जन्म के पुरुषार्थ से कितनी प्राप्ति हो जाती है। भक्ति मार्ग में तो जन्म बाई जन्म ठोकरें खाते आये, मिलता तो कुछ भी नहीं। समझा? यह तो एक ही जन्म में मिलता है इसलिए सहज कहा जाता है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति कहा जाता है। आजकल तो देखो कैसे-कैसे इन्वेन्शन निकालते रहते हैं। साइंस का भी वण्डर है। साइलेन्स का भी वण्डर देखो कैसा है? वह सब कितना देखने में आता है। यहाँ कुछ नहीं है। तुम शान्ति में बैठे हो, नौकरी आदि भी करते हो, हथ कार डे...और आत्मा की दिल यार तरफ, आशिक माशूक भी गाये हुए हैं ना। वह एक दो की शक्ल पर आशिक होते हैं, विकार की बात नहीं रहती। कहाँ भी बैठे याद आ जायेंगे। रोटी खाते रहेंगे बस सामने उनको देखते रहेंगे। अन्त में तुम्हारी यह अवस्था हो जायेगी। बस बाप को ही याद करते रहेंगे। अच्छा।

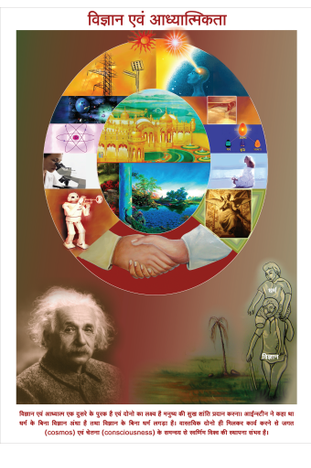

Coming soon...

Get Ready...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:

1) रूप-बसन्त बन मुख से सदा सुखदाई बोल बोलने हैं, दु:खदाई नहीं बनना है। ज्ञान के विचारों में रहना है, मुख से ज्ञान रत्न ही निकालने हैं।

2) निर्मोही बनना है, हर एक से प्यार से काम लेना है, गुस्सा नहीं करना है। अनाथ को सनाथ बनाने की सेवा करनी है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

वरदान:- **अपने फरिश्ते रूप द्वारा गति-सद्गति का प्रसाद बांटने वाले मास्टर गति-सद्गति दाता भव**

वर्तमान समय विश्व की अनेक आत्मायें परिस्थितियों के वश चिल्ला रही हैं, कोई मंहगाई से, कोई भूख से, कोई तन के रोग से, कोई मन की अशान्ति से .... सबकी नजर टॉवर ऑफ पीस की तरफ जा रही है। सब देख रहे हैं हा-हाकार के बाद जय-जयकार कब होती है।

Call of time/समय की पुकार Wake up - We are God's Army

तो अब अपने साकारी फरिश्ते रूप द्वारा विश्व के दु:ख दूर करो, मास्टर गति सद्गति दाता बन भक्तों को गति और सद्गति का प्रसाद बांटो।

स्लोगन:- मन को इतना शक्तिशाली बना लो जो कोई भी परिस्थिति मन को हलचल में न ला सके।

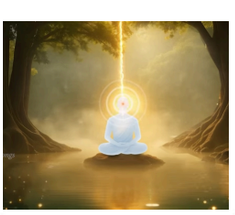

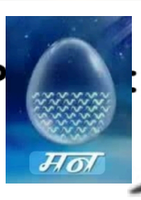

अव्यक्त इशारे -

अब सम्पन्न वा कर्मातीत बनने की धुन लगाओ

अब सेवा के कर्म के भी बन्धन में नहीं आओ।

Attention Please..!
Don't fall in Trap of Maya

हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेन्ट, हमारी सहयोगी आत्मायें, यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है, इस कर्मबन्धन से कर्मातीत।

तो कर्मातीत बनना है और "यह वही हैं, यही सब कुछ हैं," यह महसूसता दिलाए आत्माओं को समीप ठिकाने पर लाना है।

रूप बसन्त

विशाल नगरी में महाराज चन्द्रसेन की दो रानियाँ थीं। एक सुनीति जो बहुत ही भक्ति-भाव वाली थी, दूसरी कनकलता जो कि बहुत ही अभिमानी और अपनी ही मनमानी करने और कराने वाली थी। रानी सुनीति के दो बेटे थे - रूप कुंवर और बसंत कुंवर। दोनों ही बेटे बहुत ही एकाग्रता से राजविद्या पढ़ते थे। दूसरी रानी कनकलता का बेटा मान कुंवर बहुत ही उदण्ड और शरारती था। वह पढ़ाई पढ़ने की बजाए अपने मित्रों के साथ नगर में सबको परेशान कर अपना रोब जमाने निकल पड़ता था। छोटी-सी बीमारी में सुनीति रानी की मृत्यु के बाद रानी कनकलता ने दांवपेंच लगाकर दोनों कुंवरों को देश निकाला दिलवा दिया। राज्य से बाहर निकलने के बाद बड़े भाई रूप कुंवर ने छोटे भाई बसंत कुंवर को समझाया कि हमें किसी से भी यह नहीं कहना है कि हम महाराजा चन्द्रसेन के बच्चे राजकुमार हैं क्योंकि ऐसा करने से अपने बाप का नाम बदनाम होगा।

ये दोनों भाई जहाँ भी काम करने जाते तो कोमल हाथों में छाले पड़ जाते थे पर फिर भी सबकुछ चुपचाप सह लेते थे। वे जहाँ-जहाँ काम करते वहाँ-वहाँ दोनों के गुण, बोलचाल, रॉयल्टी, व्यवहार आदि को देख सब यही कहते कि ये कोई साधारण लड़के नहीं लगते हैं, ये तो जैसे राजकुमार लगते हैं। कार्य कराने वाले कभी-कभी उनको अपमानित भी करते थे, ज्यादा काम भी कराते थे परन्तु फिर भी दोनों ही कुंवर सदा अपकार करने वालों पर भी उपकार करते थे। वे कभी किसी का काम बिगाड़ते नहीं थे।

थोड़ा धन भी वे जरूरतमंदों को दान अवश्य करते थे। कभी भोजन करने बैठे और कोई मांगने वाला आ जाता तो जिसके घर पर काम करते थे वह उनको भगाने की कोशिश करता था लेकिन रूप-बसंत खड़े होकर अपना

भोजन उनको दे देते थे। आसपास रहने वालों की समस्याओं को सुनकर उन्हें कुछ न कुछ सुझाव देते थे और अपनी तरफ से भी कुछ मदद अवश्य करते थे। पूजा-पाठ आदि भी करते थे। जिस भी गाँव में जाते थे वहाँ के लोग उन्हों के पास अपनी समस्याओं को लेकर स्वत: ही आते थे।

एक बार उन्हें लगा कि हम छोटे-छोटे गाँवों में काम करते हैं, इससे अच्छा है कि हम किसी बड़े नगर में जाकर काम करें। यह सोचकर दोनों भाई नगर की ओर चल दिये। चलते-चलते घोर जंगल आया और रात हो गई। उन्होंने सोचा कि रातभर यहीं ठहर जाते हैं। रात के चार प्रहरों में से दो प्रहर एक भाई पहरा देगा और अगले दो प्रहर दूसरा भाई पहरा देगा, ऐसा निश्चय किया गया। सबसे पहले बड़े भाई रूप कुंवर ने छोटे भाई बसंत कुंवर को सुला दिया। दो प्रहर पूरे होने पर भी बड़े भाई की, छोटे को जगाने की इच्छा नहीं हुई लेकिन तीन प्रहर पूरे होते-होते अचानक बसन्त कुंवर की आंखें खुल गयीं। आसमान में तारे देखकर उसने कहा, भैया, आपने मुझे तीन प्रहर सोने दिया। अब आप आराम से सो जाइये। दिनभर चलने और तीन प्रहर जागरण की थकान के कारण रूप कुंवर गहरी नींद में सो गया। बसंत कुंवर जाग रहा था। उस समय पेड़ पर तोता-मैना आपस में बात कर रहे थे कि इस पेड़ पर एक साल में सिर्फ एक ही फल पकता है लेकिन यह फल ऐसा है कि जो इस फल को तोड़ेगा उसे विषैला नाग डसेगा और जो उसे खायेगा वह सुबह होते ही महाराजा बन जायेगा। लेकिन महाराजा बनते ही वह अपनी पुरानी याददाश्त भूल जायेगा। सिर्फ संस्कार इमर्ज रहेंगे। जब उसे कोई फिर से याद दिलायेगा तब ही उसे पुरानी स्मृति आयेगी। इसलिए आज तक कई लोगों ने यह फल खाने की कोशिश की लेकिन उन्हें विषैला नाग डस गया। तोता-मैना की ये बातें सुनकर बसंत कुंवर के मन में आया कि हम तो दोनों भाई हैं। रूप कुंवर ने तो ये बातें सुनी नहीं हैं तो मैं ऐसा करूं कि इस फल को तोड़कर बड़े भाई को खिला देता हूँ ताकि वह महाराजा बन जाये क्योंकि उनमें मेरे से भी ज्यादा

प्रजापालन के गुण हैं। वह प्रजा को बहुत सुखी रखेंगे (त्याग भावना)।

वह खुद फल खाकर महाराजा बन सकता था फिर भी उसने फल तोड़कर तुरन्त ही रूपकुंवर को जगाकर कहा, ''भैया, इस पेड़ पर बहुत ही मीठे फल थे। मैंने तो बहुत खाये, अब एक ही बचा है, आप इसे खा लो।'' ऐसा कहकर रूप कुंवर को फल खिला दिया। थोड़ी ही देर में एक विषैला नाग आया और बसंत कुंवर को डसकर एक पल में वहाँ से चला गया। बसंत कुंवर बेहोश हो गया। तब रूप कुंवर उसको उठाकर पास ही बहती हुई एक नदी के किनारे पर ले गया और दंश वाले भाग पर थोड़ा चीरा लगाकर पांव को बहते पानी में रखा ताकि खून के साथ जहर भी पानी में बह जाये। थोड़ा-सा उजियारा होने पर उसे थोड़ी ही दूरी पर नगर दिखाई दिया। वह किसी वैद्य को बुलाने के लिए उस ओर दौड़ पड़ा।

उस नगर के राजा को कोई वारिस नहीं था। राजा की मृत्यु के बाद राजपुरोहित ने कहा कि पूरे राज्य के लोग नगर चौक में इकट्ठे हो जायें और हथिनी जिस पर भी जल-कलष रखेगी वही इस राज्य का नया राजा बनेगा। उस अनुसार पूरे ही राज्य के लोग नगर-चौक में सुबह होने से पूर्व ही पहुँच गये।

दूसरी तरफ, रूप कुंवर वैद्य को ढूंढने जब राज्य में गया तो हर घर खाली था। वह जब नगर-चौक में पहुँचकर वैद्य से मिलकर उसको अपने साथ चलने की प्रार्थना कर ही रहा था कि उतने में ही हथिनी घूमती-घूमती उसी स्थान पर आकर ठहर गई और उसने रूप कुंवर के सिर पर ही जल-कलष रख दिया। कलष का जल सिर पर पड़ते ही रूप कुंवर पिछली याददाश्त भूल गया। सिर्फ राजाई संस्कार इमर्ज रहे। साधारण रूप वाला रूप कुंवर जो कि मूल रूप में राजाई कुल का ही बेटा था, अब सचमुच राजा बन गया। राज्याभिषेक के बाद जब उसने राज कारोबार संभाला तो पूरे ही राज्य में सुख-शान्ति का साम्राज्य

फैल गया। वह प्रजा को सब प्रकार की सुविधायें देने का ध्यान रखता। रात को और दिन में भी नगरचर्या करके लोगों के दु:ख-दर्द को जान लेता और फिर राज दरबार में चर्चा करके समाधान करता। उसका प्रजा के प्रति इतना वात्सल्य था कि थोड़े ही समय में वह प्रजाप्रिय राजा बन गया। उधर बसंत कुंवर नदी के बहाव में बहता हुआ उसी नगर के घाट के पास पहुँचा। तब कपड़े धोते हुए धोबी ने उसे बचा लिया और प्रयास करके उसे होश में ले आया। ठीक होने पर बसंत कुंवर ने अपने भाई रूप कुंवर को ढूंढने की कोशिश की। उसे पता चला कि वह इसी राज्य का महाराजा है लेकिन उसे यह भी पता था (पक्षी के कहने अनुसार) कि रूप कुंवर सारी ही याददाश्त भूल गया होगा और मैं जब याद दिलाऊंगा तभी उसे याद आयेगा। इसलिए वह युक्ति रचकर राज्य दरबार में पहुँच गया और वहाँ जाकर एक गीत सुनाया जिसमें अपनी पूरी जीवन कहानी सुना दी। गीत सुनते-सुनते महाराज रूप कुंवर को अपनी पुरानी स्मृति वापस इमर्ज हो गयी। और वह अपने भाई बसंत कुंवर को पहचान गया। बाद में उसे अपना मंत्री बना दिया और दोनों ही भाइयों ने बड़े ही सुचारू रूप से राज्य कारोबार चलाया।

आध्यात्मिक भाव – बाबा हम बच्चों को कहते हैं कि ''बच्चे, आप अभी वनवाह में हो इसलिए रहो साधारण रूप में लेकिन आपके बोलचाल, व्यवहार आदि से सभी को यह लगे कि ये कोई साधारण आत्मा नहीं हैं। ये तो ईश्वरीय कुल या दैवी कुल की आत्मायें हैं। जैसे बसंत कुंवर ने सारी बातों का पता होते भी रूप कुंवर को महाराजा बनाया उसी तरह तुम बच्चों में भी त्याग की भावना होनी चाहिए। जब तुम बच्चे सतयुग में राजा बन जाओगे तब तुम पुरानी याददाश्त, जो अभी ईश्वरीय ज्ञान के रूप में है, वह भूल जाओगे लेकिन तुम्हारे दैवी गुण संस्कारों में इमर्ज रहेंगे। कल्प के अन्त में मैं आकर तुम बच्चों को फिर से आदि-मध्य और अन्त का ज्ञान दूँगा तब फिर से तुम्हें पुरानी स्मृति इमर्ज हो जायेगी।''